

DPN 6469

1. दक्षिणकाली त्रैलोक्य मोहन कवच
2. लक्ष्मी नृसिंह कवच

1. DAKṢINAKĀLĪ TRAILOKYA MOHANA
KAVACA
2. LAKṢMĪ NR. SIṂHA KAVACA

Title :

Run. No. 7194

Cat. No.

Micro. No.

Subject *कावच* Kāvaca *Hyman*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 13 X 5.5

Folios 18

Lines (in a page) 4/5

☒ Compl. / ☐ Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

Illus. : Two colour paintings

Material : palmleaf / paper / *thyaṣaphu* /

Condition : ☒ fine / ☐ damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
इन्द्रादेव संसा प्रीतिकाल (महा निवेष्टनी कवचं मह्यं च) कथयन्ति ।

समाप्ति वाक्य / colophon

इति श्री ब्रह्मादित्ये श्री कृष्ण कालिकायास्तैलोक्य मोहनं नाम कवचं संपूर्णं ॥ शुक्लं लोचनं
पादकान्तं ॥ नमः सिंह दक्षिण मनोऽथ । शिखिस्तु ॥

2. Ниспача / Beginning line

३० नमो हरिहाय ॥ प्रह्लादाय ॥ अनेक मन्त्र कोटीनां हरिहानाम संचाल ॥
अनेक विधी जगनां वि ॥

अनेक विधी रसायन विष रोगाग्नेवाणं ॥ ३० अष्ट श्री लक्ष्मणसिंह मन्त्र कवच स्तु

अथा कृषिरणुषुप दन्तः इति वीजं सैः शक्तिः सैः कीलवं नृसिंहो देवता मम सर्व
 रोगान् वीर्यपन्नग व्याधृष्टादिकं शत प्रेत पिशाच शक्तिनी यन्त्रमन्त्रानेक
 निवाणार्थे जपे । विनियोगः ॥

श्री लक्ष्मी नृसिंह उवाच ॥



cmts.

5

10

15

20

25

5

0

cmts.

5

10



10

5

0

cm

5

10



10 श्री गणेशाय नमः ॥ ददददमहा दद संसा
नयीनिकावक ॥ महाविद्यन्वनीकवचं मयं त्वं
कथयस्व सा ॥ १ ॥ श्रीनिवासाय ॥ भृगुदविमहा
सर्वसर्वविद्यारुमा रुमा ॥ सर्वन्वनीमहाविद्या

5 सर्वदववयूजिना ॥ २ ॥ अथाऽकटाक्रमः
॥ ३ ॥ लाक्षविजयीरुनः ॥ बहवक्रमलीना ॥
विरुर्वक्रायुजायनिः ॥ ३ ॥ सवीयनिर्द्विनाया
यमायिधर्मनायकः ॥ ४ ॥ लाक्षयावियदाक्रम

10
लाश्रीरु विप्रिया ॥४॥ दिनस्वामिन विप्रिया निभय
निमरुचन ॥ वन ॥ यिजलाधीनद्वयं यो विधनश्च
न ॥ ७ ॥ अद्यादुतगतिर्वीयुगल ॥ विद्युना गक ॥
वागीधन ॥ सूनाचार्यादेत्याचार्यः कविर्महान् ॥ ६ ॥
वदिसकलादवा सर्वसिद्धिधनाप्रिय ॥ गस्यामुकव

5
वयं यत्सुनयत्सागृहावया ॥ १ ॥ अस्य श्रीमदक्रिणका
लिकामनुमयमहाकववस्य महाकालरुनवसवि ॥
अनूद्युक्त ॥ श्रीमदक्रिणकालिकादवता ॥ धर्मार्थः
काममाकांक्षजयविनियोगः ॥ ललाटयातुवलीमरु
विनावाधितासदा ॥ नयुर्भसदायातुकी ॥ ३ ॥ विप्रस्यः

10
विना ॥ ९ ॥ कौं ४ यातु मना साव द्ध न स विना क्व व ॥ कौं २
व व द न यातु ग क न ना वि ना स दा ॥ १० ॥ कौं सा हा भ व
न यातु ना भ ने व प्र यू जि ना ॥ ॐ कौं कूं कौं सा हा भ जि कौं
व सर्व दा वतु ॥ ११ ॥ द न य किं स दा यातु ॐ कौं कौं कूं सा
हा म म ॥ ३ कि म् कि य दा का ली धि अ नि त्यं स स वि ना ॥

७
१२ ॥ अ द्वा ध न स दा यातु कौं २ कूं २ कौं २ म म ॥ सूर्य ना
ना धि ना वि द्या स र्व सि धि य दा य का ॥ १३ ॥ क ० यातु
स दा का ली नं कौं कौं कूं सा हा स दा ॥ व द न ना ना धि ना
वि द्या वतु र्व न र्द ल य दा ॥ १४ ॥ रु क यातु स दा कौं २
कूं २ कौं २ सा हा म म ॥ १५ ॥ ॐ कौं कूं कौं २ सा हा व

10
वृत्तयदायका ॥२१॥ जौं शद कि न का लि क जौं र
सा हा क टि स्त रं ॥ सा द नी च म हा वि या ना य व म
वि ना स दा ॥२२॥ जा नू नी या तु ओं कौं दूँ जौं सा हा व
तु जं च क ॥ सा द नी च म हा वि या य द्वा द ना य स वि
ना ॥२३॥ जौं दूँ जौं द कि न का लि क जौं दूँ जौं सा हा

5
व तु ॥ च तु र्द ना या द य म् पू ना द व न स वि ना ॥२४॥ जौं
दूँ जौं द कि न का लि क जौं दूँ जौं च न थं गु लि ॥ या तु
सा द नी का ही क उ या ल न स वि ना ॥२५॥ ओं जौं दूँ
जौं द कि न का लि क जौं दूँ जौं सा हा ॥ न र य यं कि स दा
या तु यं च द नी म रु न्य नी ॥२६॥ जौं ३ दूँ २ जौं १ जौं २

10
उय कर्व नैव डा न स स रा म या ॥ अथा नृ न क
उन सान दा जन ज दू ना ॥ ३३ ॥ सर्वे नाना विना विद्या
जना मृ स विना निनी ॥ पू पु विद्या म हा का ली विद्या ॥
ही य की र्हि ना ॥ ३४ ॥ काली क या लि नी क ला क रू कू
ना विना विनी ॥ विद्य वि लान थ ॥ अ अ प्र रा दी का घन वि

5
षा ॥ ३५ ॥ नी ला घ ना व ला का च मा ज मू डा य की र्हि ना ॥
ए ना स र्व र्व भे ध ना मू उ माला वि ह वि ना ॥ ३६ ॥ कूं कूं
का ना द हा स न स र्व उ या उ मा स दा ॥ व क्रा णी या उ मा
व आ न यां वे लू वा स दा ॥ ३७ ॥ मा ह न्व नी या उ या म्या
वा मू गु नै म न स दा ॥ को मा नी य वि म या उ वा य थ वा

यत्राजिगा ॥३८॥ वानाही चारु नयातु उ मर्था नानमि
हिका ॥ ३९ ॥ उ र्ध्वयातु काली या विष्टर कालिका ॥
३९ ॥ जलसु लय याषान मय नला ज न मृदु ॥ ना
स्मान जलस्मान विवाद मन (गन २५) ॥४०॥ मवा मन
मम नच नूया म नच तु व्य ॥ यतु यतु रुयस्मान

सर्वतु यातु कालिका ॥४१॥ नरुतु निधि वा नच या (ग
कन न क वृत्त ॥ मासय क व ल नच या म द र नि म व
के ॥४२॥ दिवा ना जो निवा यातु स न्धया यातु कालि
का ॥ सर्वतु कालिका यातु कालिका यातु सर्वदा ॥४
३॥ सयनः नूया निली क व र निद ता चि न ॥ सर्वः

5



cm

5

10

5

0

cm

5

10



10
यापयनित्यस्य सगच्छविसन्निभो ॥ ४४ ॥ उल्ल
वभाहननामकवचंदवद्वर्त्तु ॥ यद्यप्येवमस्मा
कः प्रष्टुं सर्वकर्मजयान्वितः ॥ ४५ ॥ सर्वधर्म
वद्वर्त्तु सर्वविद्यमयनमयनः ॥ क्वचनभूवविज्ञान
सुवाग्मीकादिलमयनः ॥ ४६ ॥ गणेशमवप्रतिवर्त्तना

५
दूयकामसमः सदा ॥ वायुल्लवलायनमद्वर्त्तु
वसर्वगः ॥ ४७ ॥ अथर्ववर्त्तु ॥ सकार्यादि
त्यावाकतिर्यथा ॥ जनान्मृत्युविनिर्मुक्तिः सर्वः
सर्वदमकः ॥ ४८ ॥ अथारुणमतिः ॥ मन्त्राकार्याः
दिकसमन्वितः ॥ यदहंकर्त्तुनित्यं कवचंदवद्वर्त्तु

॥ ५२ ॥ न० ॥ कानरुयंगस्य न ना० नयनाङ्कय ॥ मरु
ॐ विविवा दव न० ॥ वरुयं न हि ॥ ५० ॥ स० ग्रामपूजय
कुरुयथ वद्विद हृत् न ॥ वक्रास्त्रादीनि मस्त्रा नि य
म्याहिकं ट कानि च ॥ ५१ ॥ गह्य द ह न रि न्द नि व ज उ
ह्य रु व द य ॥ ग्रह रु ग यि म्वा श्व य रु ना रु स कि न्नः

ना ॥ ५२ ॥ सर्वदस्य पुना म नि हि स कान श्व मि ख र्व ॥
न द ह न द ह्य नि न ना य य गिरा स्त्र न ॥ ५३ ॥ न० ॥
षय नि वा ना यि क्क म न दू नू ग य य ॥ यूरु व त्या ल
का ला न हि म कू नू ग म मी ॥ ५४ ॥ जल सू य द्दि का ला
या ॥ न रु य नि न म स य ॥ व दू कि क थ यि व्या मि सर्व

10
सिद्धिमुपातरुं १ ॥ ७७ ॥ नाना राग सुखं तु का स
क्या निवर्गाव ७ ॥ तिरिव लायू जयि लाचक्षन यद
म संगर्ग ॥ ७८ ॥ माह न सु मु न क र्धमान ला चाट न क
म ॥ वात वं ध्या व या ना नी व ध्या व मृ न य र्छि नी ॥ ७९ ॥
कं ८० वा वा म वा हो वा तिरिव ला क्ष न य य दि ॥ ग दा यू ज

5
तरु त्स र्वा वि नायू ४ य छि न ४ शु चि ४ ॥ ८० ॥ सा मि ना व न्न
रा सा पि ध न धा न्न स म न्वि ना ॥ रू द क व र्ध म सा त्या या ज
य ला ति का म न्न ॥ ८१ ॥ ध्या मन का टि जा य न न स्य दि
या न सि ध्वा ति ॥ य द य द रु व दू र व ला का ना नि चि ना क र्वा
॥ ८० ॥ रू द ला क म सा दू ४ र वी य न य न न क र्ध १ ॥ शु

10
३ मनुसमंस्तथायाजयत्कवचाहमं ॥३१॥ तस्य विद्या
हवत्सिद्धिस्तस्य सत्यं वनानन ॥ यद्दं कवचं दिव्यं
युक्ता भक्तिवद्वा रुच्यते ॥३२॥ रुक्माय प्रवृत्तय
साधकाय युक्ता भयम् ॥ ॥ नैति श्रीनूतन्यामलश्रीद
किनकालिकाया पुलाक माहर्न नाम कवचं सयूक्तम् ॥

5
७ रुममुलखकया ० कानां ॥ नैति श्रीनूतन्यामलश्रीद
नथ सिद्धिस्तस्य सर्वदा ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥
वक्ष्यामि वाच ॥ अनेकमनुकाटीनां नृसिंहानां मयं
वयं न ॥ अनेक विधिवद्वा या विषया गमनिवान
तं ॥ ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी नृसिंहमनुकवचस्य वक्ष्या

10
मषिन्वय य कृन्व ४ क्रोवी जं नो न कि ४ वें की
ल क नु सि होय वता म म स च वा ग न यो न य
न स या य व शि क र म पु ग पि न भ वे न म कि
नी य नु म नु न क नि वान म (च) ज य वि नि
या न ४॥ ॥ ॐ क्रो मृ मृ सा र्या न म ४॥ ॐ प्रो
व ऊ नी र्या न म ४॥ ॐ क्रो भ ध्व मा र्या न म ४॥ ॐ नो

5
अ न मि का र्या न म ४॥ ॐ प्रो क नि सि का र्या न
म ४॥ ॐ क्रो क व ग ल पृ ष्ठा र्या न म ४॥ ॐ क्रो
क य या य न म ४॥ ॐ प्रो नि व म स्वा दा ॥ ॐ क्रो
नि खा ये वो षट् ॥ ॐ नो क व वा य दू ॥ ॐ नो न
गु न या य वो षट् ॥ ॐ क्रो मृ मृ मृ रुट् ॥ मृ ध

ध्यानं ॥ सर्वं क्लान्तं मुखं च यममलं कीर्तयितुं
मक्षकलं धामानृतमतिपुष्पवदनं रुषां
सहस्राक्षं तीक्ष्णवक्त्रं विना कथायवना
निजाद्यमर्कं कुर्विं कुशीरुत रुदिन्यमिदं
धवलं लक्ष्मीं न सिद्धं कथं ॥ ०० ॥ तिष्ठानं ॥ ॐ

कोषोकोषोकोषोकोषो नमः ॐ नमान् सिंहाय
 सर्वकृष्टविनाशाय सर्वजनभाहनाय स
 र्वनाशकवैश्वं कृन् ॐ नमान् सिंहाय सिंहा
 य सिंहाजाय नमः ॥ विष्णवे नमः काल
 ईश्वर कालवदनाय ॐ उग्राय ॐ उग्रवी

श्रीशुं उग्रविकटाय वक्रादं हाय स नृदा
 य नृद धायाय रुद्राय रुद्रकावि (१५) शुं श्रीं
 श्रीनृसिंय नमः साहा उ नभानृसिंहाय क
 पिल उठा य अभाय वा वा य स र्पं रुत म हा
 य उग्रवन्दन रूपाय शुं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं

क्रां क्रां क्रां रुद्र साहा सर्वनागमनां वं धर्वं ध
 सर्वग हानां वं धर्वं ध सर्वद वया पायी सर्व
 ध १ सर्वश्रीनामं वं ध १ सर्वयन्नमनां वं ध १
 सर्वनागमनां वं ध १ सर्वयाद्यानां वं ध १ सर्व
 वृष्टिका नां वं ध १ सर्वरुतपुतपिगमवना

